कार्लो के लिए एक बकरी

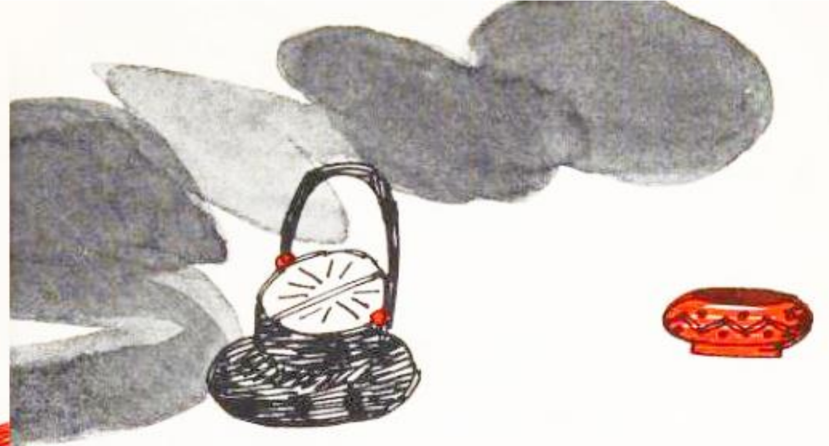
जूडिथ



कार्लो के लिए एक बकरी



जूडिथ



कार्लो के लिए एक बकरी

कार्लो लंबे समय से इस दिन
की प्रतीक्षा कर रहा था.
वह और उसके पिता आज
बकरी खरीदने जा रहे थे.
कार्लो ने जल्दी-जल्दी अपना
नाश्ता किया.
“हमारी बकरी सुंदर होगी,”
उसने अपनी माँ से कहा.





"उसके छोटे-छोटे काले पाँव और
बड़ी-बड़ी भूरी आँखें होंगीं.
उसके बाल नर्म और चमकीले होंगे."
"कार्लो, जल्दी करो,"
उसकी माँ ने कहा.
कार्लो के पिता प्रतीक्षा कर रहे थे.
"आज बाज़ार में बहुत सारी
बकरियाँ होंगी," उन्होंने कहा.

"हम अपनी मन चाही
बकरी चुन लेंगे."
नगर की ओर जाने के लिए
वह पहाड़ी से उतरने लगे.
रास्ते में उन्हें उनके
कई मित्र मिले.

“हम एक बकरी खरीदने जा रहे हैं,”

कार्लो ने उनसे कहा,

“सबसे सुंदर बकरी.”

“मुझे आशा है कि जैसे बकरी

तुम चाहते हो वैसी तुम्हें

मिल जायेगी,” एक मित्र बोला.

“अवश्य मिल जायेगी,” कार्लो ने कहा.





बाज़ार में खूब भीड़भाड़ थी.

“बकरियाँ, बकरियाँ, बकरियाँ,”

एक बूढ़ा आदमी चिल्लाया.

“क्या तुम बकरी खरीदना

चाहते हो?” उसने कार्लो से पूछा.

“हाँ,” कार्लो ने कहा.

“हमें अपनी सबसे अच्छी

बकरी दिखाओ.”

उसने उन्हें एक खूबसूरत

बकरी दिखाई.

उसके बाल नर्म और चमकीले थे.

उसके पाँव काले थे और आँखें

बड़ी-बड़ी और भूरी थीं.

“पिताजी,” कार्लो ने कहा,

“हम यही बकरी लेंगे.

इससे सुन्दर बकरी मैंने

आजतक नहीं देखी.”

“इसकी कीमत कितनी है?”

कार्लो ने बूढ़े आदमी से पूछा.





जब उसने उन्हें कीमत बताई तो

कार्लो के पिता निराश हो गए.

“हमारे पास इतने पैसे नहीं हैं,”

कार्लो और उसके पिता

वहाँ से चल दिए.

“रुको! रुको!” उस आदमी ने पुकारा.

“आप के पास कितने पैसे हैं?”

कार्लो के पिता ने उस

बूढ़े आदमी को अपने पैसे दिखाए.

“मेरे पास एक और बकरी है

जो मैंने तुम्हें दिखाई न थी,”

बूढ़े ने कहा.

“कोई उसे लेना नहीं चाहते

क्योंकि वह छोटी और दुबली है.



उसे आप थोड़े पैसों में भी

खरीद सकते हैं.”

“प्लीज,” कार्लो ने कहा,

“हमें वह बकरी दिखाओ.”

बूढ़े आदमी ने उन्हें

वह बकरी दिखाई.

वह कार्लो के पास आई.

उसने कार्लो को देखा और

उसका हाथ सूंघा.

“कितना उदास है इसका चेहरा!”

कार्लो ने कहा.

“यह सुंदर नहीं है पर मुझे लगता है

कि यह मुझे पसंद करती है.”

“हम इसे खरीद लेंगे,”

कार्लो के पिता ने कहा.





“आओ, नन्हीं बकरी,”

कार्लो ने कहा.

“तुम अच्छे घर में जा रही हो.”

कार्लो के मित्र, पैड्रो ने

पुकार कर कहा,

“यह भद्दी बकरी

तुम ने कहाँ से ली, कार्लो.”



टीना कार्लो और उसके पिता के पीछे
धीरे-धीरे चलती रही.

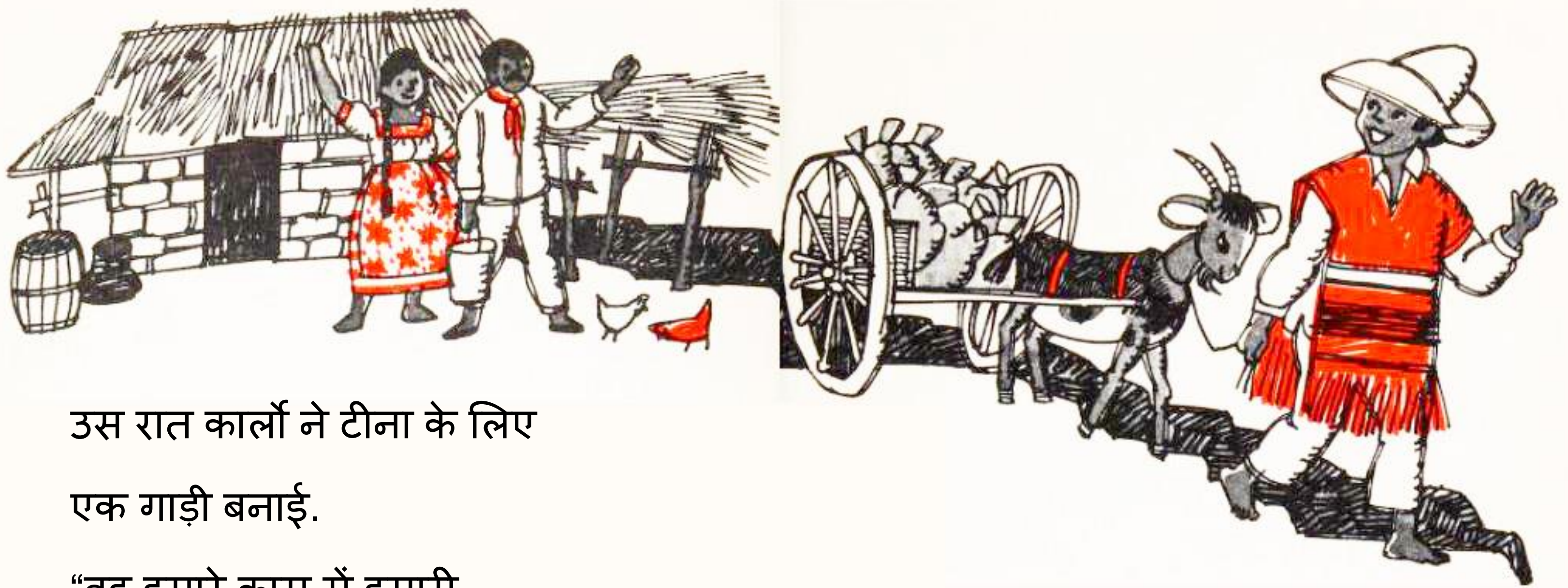
“पिताजी,” कार्लो ने कहा, “टीना अब
उदास नहीं लग रही. मुझे लगता है कि
वह समझ गई है कि हम
उसके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे.”

“यह भद्दी नहीं है,” कार्लो ने कहा.
“यह सुंदर है!”

“तुम इसे किस नाम से बुलाओगे?”
दूसरे मित्र ने पूछा.

“मैं इसका नाम टीना रखूँगा,”
कार्लो ने उत्तर दिया.





उस रात कार्लो ने टीना के लिए

एक गाड़ी बनाई.

“वह हमारे काम में हमारी

सहायता करेगी,” उसने पिता से कहा.

“कल हमने प्याज़ की आठ बोरियाँ

बाज़ार ले जाकर बेचनी हैं.

टीना बोरियों को अपनी गाड़ी में

खींच कर ले जा सकती है.

आपको बाज़ार नहीं

जाना पड़ेगा.”

अगली सुबह

कार्लो ने प्याज़ों से भरी

सारी बोरियाँ

गाड़ी में रख दीं.

टीना गाड़ी खींचने लगी

और गाड़ी चल दी.

“अलविदा,” कार्लो ने कहा.

नीचे जाते हुए रास्ते पर
बकरी धीरे-धीर चलती रही.
उसके पीछे छोटी गाड़ी
हिचकोले खा रही थी.
जब वह बाज़ार पहुँच गये तो
कार्लो ने गाड़ी खड़े करने के लिए
एक जगह ढूँढ़ ली.

टीना निकट ही प्रतीक्षा करने लगी.
कार्लो पुकारने लगा.
"प्याज़ ले लो! प्याज़ ले लो!"
एक औरत रुकी और
उसने प्याज़ों को देखा.
"क्या यह तुमने उगाये थे?"
उसने पूछा.







"हाँ," कार्लो ने कहा.

उस औरत ने कुछ प्याज़ खरीद लिए.

कार्लो ने पैसे

एक थैली में रख लिए.

कई और लोगों ने

उसके प्याज़ ख़रीदे.

दुपहर के समय कार्लो ने खाना

खाने के लिए काम रोक दिया.

अचानक उसे आवाज़ सुनाई दी.

करच! करच! करच!

उसने पीछे घूम कर देखा.

टीना उसकी तिनको की बनी

हैट खा रही थी.

"ओह, टीना!" उसने कहा.

"तुम्हें भूख लगी है."

कार्लो ने टीना के लिए

कुछ गाजरें खरीदीं.

जल्दी ही सारे प्याज़

बिक गए.

“घर जाने का समय हो गया है,”

कार्लो ने टीना से कहा.





छोटी गाड़ी को खींचते हुए टीना

धीरे-धीरे रास्ते पर चलने लगी.

जव वह ऊँचाई पर आये

तो कार्लो ने कुछ सुंदर फूल देखे.

“रुको, टीना,” उसने कहा.

“मैं माँ के लिए कुछ फूल तोड़ लूंगा.”

रास्ते में सबसे ऊंची जगह पर

कार्लो को अपने पिता मिले.

“मैंने सारे प्याज़ बेच दिए,”

उसने कहा.

“उत्तम,” पिता बोले.

“तुमने और टीना ने

अच्छा काम किया है.”

कार्लो ने फूल अपनी माँ को दिए.

माँ ने कार्लो को धन्यवाद कहा.

“तुम्हारी हैट का क्या हुआ?”

माँ ने पूछा.

“वह कहाँ है?”

“टीना को भूख लगी थी



जब मैं देख न रहा था

वह मेरी हैट खा गई,”

कार्लो ने बताया.

उसकी माँ हँस पड़ी.

“मैं तुम्हारे लिए

एक और हैट बना दूंगी.

हमारे पास बहुत तिनके हैं,”

माँ ने कहा.





जब उन्होंने भोजन कर लिया
तब कार्लो ने टीना को खाना खिलाया.
वह बहुत भूखी थी.
“तुम एक अच्छी बकरी हो, टीना,”
कार्लो ने कहा.
“मुझे ख़ुशी है कि तुम
हमारे साथ रहने आ गई.”

“माआआ,” टीना ने उत्तर दिया.
“शुभ रात्रि, नन्हीं बकरी,”
कार्लो ने कहा.

एक दिन शाम के समय

कार्लो को टीना कहीं न मिली.

उसने घर के निकट

खेतों में उसे ढूँढा.

उसका नाम पुकारते हुए

वह आगे पीछे गया.

टीना नहीं आई.



"मुझे लगता है कि वह खो गई है,"

कार्लो ने कहा.

"वह लौट आएगी,"

कार्लो के पिता ने कहा.

"वह दूर न गई होगी."

"अब तक सोने के लिए

टीना को कोई सुरक्षित जगह

मिल गई होगी,"

कार्लो की माँ ने कहा.

सुबह होने पर कार्लो ने

फिर से टीना को ढूँढा.

लेकिन वह उसे कहीं न मिली.

"शायद वह पहाड़ी से नीचे उतर कर

बाज़ार चली गई होगी,"

कार्लो के पिता ने कहा.



उस रात जब सोने के लिए

कार्लो बिस्तर में लेटा तो

उसे लगा कि उसने टीना की

पुकार सुनी थी.

“माआआ, माआआ.”

वह झटपट उठा

और घर से बाहर आ गया.

“तुम्हें वहाँ जाकर ढूँढना चाहिए.”

“मैं ऐसा ही करूँगा,” कार्लो ने कहा.

वह जल्दी से पहाड़ी से नीचे आया.

उसने कुछ लोगों से पूछा कि

क्या उन्होंने उसकी बकरी देखी थी.

किसी ने उसे न देखा था.

निराश होकर कार्लो घर लौट आया.



उसे फिर लगा कि
टीना पुकार रही थी.
“माआआ, माआआ.”
“यह टीना है!”
उसने अपने आप से कहा.
उसने अपने पिता को जगाया.
“मैंने टीना की पुकार सुनी,”
कार्लो ने उनसे कहा.
“वह अवश्य ही
पहाड़ के बहुत ऊपर होगी.”
“मैं लालटेन लेकर आता हूँ,”
उसके पिता ने कहा.
कार्लो और उसके पिता
पहाड़ पर चढ़ने लगे.



पहाड़ पर बहुत ठंड थी.
आकाश में अँधेरा था
और चाँद दिखाई न दे रहा था.
लालटेन के प्रकाश में
वह रास्ता देख पा रहे थे.

कार्लो पुकारता रहा.

“टीना! टीना!

तुम कहाँ हो?”

आखिरकार उसे उसकी आवाज़ सुनाई दी.

“माआआ, माआआ.”

अचानक कार्लो रुक गया.

वहाँ लंबी घास में

उसे टीना दिखाई दी.

लालटेन के प्रकाश में उसने

उसके साथ एक छोटे बच्चे को देखा.

“देखिये, पिताजी!”

कार्लो ने धीमी आवाज़ में कहा.

“टीना के साथ एक सुंदर बच्चा है.





कार्लो ने लालटेन पकड़ ली.

टीना उनके पीछे-पीछे आई.

कार्लो की माँ घर के बाहर

प्रतीक्षा कर रही थी.

“बकरी का बच्चा कितना सुंदर है,”

माँ ने कहा.

इसके बाल मुलायम और

चमकीले हैं और पाँव काले हैं.”

कार्लो के पिता ने

बकरी के बच्चे को उठा लिया.



माँ ने कुछ सूखी घास इकट्ठी की.
टीना और उसके बच्चे के सोने के लिए
माँ ने एक बिस्तर बना दिया.
कार्लो ने धीमे से टीना से कहा,
“अब तुम सुरक्षित हो, टीना,
और तुम्हारा बच्चा भी!”
“माआआ,” टीना बोली.



एक दिन कार्लो के पिता ने कहा,
“टीना के साथ बाज़ार जाने का
समय हो गया है.
बेचने के लिए प्याज़ की कई बोरियाँ
हमारे पास हैं.”
कार्लो ने वह बोरियाँ गाड़ी में रख दीं.
टीना के साथ वह बाज़ार की ओर
चल दिया.
बकरी का छोटा बच्चा उनके पीछे
चलने लगा.
वह अधिक दूर न गए थे कि
पैड्रो ने पुकारा,
“कार्लो!”

“बकरी का यह सुंदर बच्चा

तुम्हें कहाँ से मिला?”

“यह टीना का बच्चा है,”

कार्लो ने उत्तर दिया.

“अब हमारे पास प्यार करने के लिए

दो बकरियाँ हैं!”



अंत